अध्याय
01

राजनीतिक सिद्धांत:- एक परिचय

A. मनुष्य की विवेकशीलता और भाषाई क्षमता ने राजनीतिक सिद्धांतों को जन्म दिया।

B. अरस्तु को राजनीति शास्त्र का पिता कहा जाता है।

C. सुकरात के शिष्य प्लेटो ने' द रिपब्लिक' पुस्तक की रचना की।

D. राजनीति विविध विचारधाराओं पर आधारित समन्वित सिद्धांत है जिसका मूल उद्देश्य समाज सेवा एवं जनकल्याण है।

राजनीति क्या है?

- राजनीति किसी भी समाज का अभिन्न अंग है।
- बेहतर समाज के निर्माण के लिए राजनीति सर्वाधिक प्रभावी व्यवस्था है।
- महात्मा गांधी के अनुसार राजनीति से जूझने के सिवाय मनुष्य के पास कोई अन्य रास्ता नहीं है।
- राजनीति नागरिक समाज को श्रेष्ठ जीवन हेतु सभी आवश्यक सुविधाओं को उपलब्ध कराने का उपागम है।
- राजनीति तमाम मानवीय अधिकारों को दिलाने और उनकी सुरक्षा उपलब्ध कराने वाली व्यवस्था है।

© JCERT not to be republished

स्वार्थपरख राजनेताओं के कारण लोग राजनीति को क्या समझते हैं?

- दांवपेच की नीति
- दल -बदल की नीति
- हिंसा और घोटालों की नीति
- भाई- भतीजावाद की नीति
- आम लोगों के शोषण की नीति

लोकप्रिय सरकारें क्या करती हैं?

- बेहतर आर्थिक नीतियों का निर्माण
- बेहतर शिक्षा नीति का निर्माण
- बेहतर सामाजिक कल्याण की नीति का निर्माण
- बेहतर स्वास्थ सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित कराना
- राष्ट्र की एकता और अखंडता को सुनिश्चित रखना
- शोषण और भ्रष्टाचार को खत्म करने का काम
- श्रेष्ठ विदेश नीति का निर्माण
- रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना
- नागरिकों को सुरक्षा की उत्तम व्यवस्था उपलब्ध कराना
- राजनीतिक जागृति फैलाने का काम

© JCERT not to be republished

अकुशल और भ्रष्ट सरकारें क्या करती हैं?

- घोटालों एवं भ्रष्टाचार को बढ़ावा देती हैं।
- बेरोजगारी एवं महंगाई को बढ़ावा देती हैं।
- शिक्षा, स्वास्थ्य एवं अन्य समाज कल्याण से संबंधित महत्वपूर्ण योजनाओं को नजरअंदाज करती हैं।
- नागरिकों की सुरक्षा पर ध्यान नहीं देती हैं।
- गरीबी उन्मूलन पर ध्यान नहीं देती हैं।
- जातीय एवं सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा देती हैं।
- नागरिकों का जीवन तबाह हो जाता है।

सरकार की कार्रवाइयों की जनता में क्या प्रतिक्रिया होती है?

- जनता सरकार के कामों में विशेष अभिरुचि लेती है।
- विभिन्न लोकतांत्रिक संस्थाओं के माध्यम से जनता सरकार के समक्ष अपनी मांगों को प्रस्तुत करती है।
- जनता सरकार की गलत नीतियों का विरोध करती है।
- जनता विभिन्न प्रदर्शनों के माध्यम से लागू किए गए असंगत कानूनों को वापस लेने के लिए सरकार को बाध्य करती है।
- जनता द्वारा प्रतिनिधियों की गतिविधियों पर वाद -विवाद किया जाता है।
- जनता भ्रष्टाचार के मुद्दों पर वाद विवाद करती है।
- भ्रष्टाचार की घटना होने या भ्रष्टाचार में वृद्धि होने पर जनता सरकार के विरुद्ध प्रदर्शनों के माध्यम से अपना विरोध दर्ज करती है।
- जनता के द्वारा मौजूदा राजनीतिक व्यवस्था में व्याप्त बुराइयों के अंत और बेहतर समाज रचने की कामना की जाती है।

© JCERT not to be republished

राजनीतिक सिद्धांत:-

- किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में जनता विभिन्न सिद्धांतों और मूल्यों से संचालित और निर्देशित होती है।

प्रमुख राजनीतिक विचारक

- कौटिल्य
- अरस्तु
- मैकियावेली
- रुसो
- हीगेल
- कार्ल मार्क्स
- महात्मा गांधी
- डॉक्टर भीमराव अंबेडकर

प्रमुख राजनीतिक सिद्धांत

- स्वतंत्रता
- समानता
- न्याय
- लोकतंत्र
- धर्मनिरपेक्षता
- समाजवाद
- साम्यवाद
- मूल अधिकार
- न्यायिक पुनरावलोकन
- एकता और अखंडता

© JCERT not to be republished

स्वतंत्रता पर विचार

- रूसो का मानना था कि स्वतंत्रता मनुष्य का मौलिक अधिकार है।
- महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता का अभिप्राय स्वराज को माना।
- भारत के संविधान में स्वतंत्रता को मौलिक अधिकार का दर्जा दिया गया है।
- स्वतंत्रता को राष्ट्र और समाज के हित में नियंत्रित भी किया जा सकता है।

समानता पर विचार

- कार्ल मार्क्स का मानना था कि समानता उतनी ही जरूरी है, जितनी स्वतंत्रता।
- डॉक्टर भीमराव अंबेडकर ने यह विचार दिया कि इस समाज में समानता स्थापित करने के लिए अनुसूचित जातियों को विशेष संरक्षण मिलना चाहिए।
- महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान छुआछूत का विरोध किया था।
- भारतीय संविधान में वंचित वर्ग के लोगों को समानता का अधिकार दिलाने के लिए विशेष संरक्षण देने के प्रावधान किए गए हैं।

न्याय

- सामाजिक न्याय
- आर्थिक न्याय
- राजनीतिक न्याय
- भारत के संविधान में सभी नागरिकों को समान सामाजिक, समान आर्थिक एवं समान राजनीतिक अवसर दिए जाने की बात की गई है।
- लोकतंत्र जनता के प्रतिनिधियों के द्वारा संचालित होने वाली शासन व्यवस्था है।

© JCERT not to be republished

लोकतंत्र

- जनता का शासन
- जनता द्वारा शासन
- जनता के लिए शासन

धर्मनिरपेक्षता

- राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होता है।
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में पंथनिरपेक्षता को जगह दी गई है।
- भारत का कोई भी नागरिक अपनी इच्छा के अनुसार कोई भी धार्मिक आचरण करने के लिए स्वतंत्र है।

समाजवाद

- किसी भी प्रकार के शोषण से मुक्त समाज और राज्य की धारणा
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में समाजवादी शब्द जोड़ा गया है।
- भारत के संविधान में नीति निदेशक तत्व में समाजवादी मूल्यों को जगह दी गई है।
- सभी नागरिकों को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय दिलाने के प्रावधान कर समाजवादी मूल्यों को गरिमापूर्ण स्थान दी गई है।
- साम्यवाद एक विचारधारा है जिसमें समाजवाद के सभी मूल्य शामिल हैं। साथ ही इसमें राज्यविहीन समाज की कल्पना की गई है।

© JCERT not to be republished

मूल अधिकार

- ऐसे अधिकार जो मनुष्य जन्म से लेकर आए हैं।
- भारतीय संविधान के भाग 3 में मौलिक अधिकारों को जगह दी गई है।
- भारत के संविधान में 6 प्रकार के मौलिक अधिकार प्रदान किए गए हैं।

न्यायिक पुनरावलोकन

- लोकतांत्रिक मूल्यों के अधीन दिए गए न्याय की पुनर्समीक्षा करना।

एकता और अखंडता

- एकता और अखंडता को संविधान की प्रस्तावना में शामिल किया गया है।
- एकता और अखंडता हमारे राष्ट्र की सर्वोच्च प्राथमिकता है।
- भारत राष्ट्र अखंड है और भारत के सभी लोग एक हैं।
- हम एक हैं की भावना ही राष्ट्रवाद है।

© JCERT not to be republished

व्यवहार में समानता

- समानता का संबंध अन्य मनुष्यों के साथ हमारे संबंधों में होता है।
- जब कोई व्यक्ति किसी दुकान या टिकट काउंटर पर कतार तोड़ कर आगे बढ़ जाता है तो वह समानता के सिद्धांत का उल्लंघन करता है।
- वृद्धों और विकलांगों के लिए जब अलग काउंटर की व्यवस्था होती है तो यह न्यायोचित है।
- जब गरीब लोग जरूरत की चीजों को नहीं खरीद सकते या वे अपने चिकित्सीय इलाज नहीं करा सकते तो वहां समानता का उल्लंघन होता है।
- जब गरीब उनके बच्चे विद्यालय नहीं जा कर काम पर जाते हैं तो समानता का उल्लंघन होता है। हालांकि भारत के संविधान में 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा पाने का मौलिक अधिकार दिया गया है।
- समाज में सभी मनुष्यों के साथ किसी भी प्रकार का भेद नहीं करना चाहिए। यही समानता का मूल सिद्धांत है।
- समानता का सिद्धांत हमें मनुष्यता की ओर अग्रसर करती है।

राजनीतिक सिद्धांत पढ़ने की जरूरत क्यों है?

- एक जिम्मेदार नागरिक बनने हेतु हमें राजनीतिक सिद्धांतों को जानना आवश्यक है।
- शोषण के विरुद्ध जागृति के लिए हमें राजनीतिक सिद्धांत पढ़ना जरूरी है।
- न्याय, स्वतंत्रता, समानता, धर्मनिरपेक्षता आदि जैसे मूल्यों को समझने और उसे व्यवहार में प्राप्त करने के लिए राजनीतिक सिद्धांतों की जानकारी आवश्यक है।
- सरकार की नीतियों को समझने और उस पर प्रतिक्रिया देने के लिए राजनीतिक सिद्धांतों का अध्ययन जरूरी है।

© JCERT not to be republished

बहु वैकल्पिक प्रश्न:-

1. राजनीति शास्त्र का पिता किसे कहा जाता है?

   a. प्लेटो b. अरस्तु

   c. मैकियावेली d. सुकरात

2. हिंद स्वराज की रचना किसने की?

   a. सुभाष चंद्र बोस

   b. पंडित जवाहरलाल नेहरू

   c. महात्मा गांधी

   d. इनमें से कोई नहीं

3. भारत के संविधान में कितने प्रकार के मूल अधिकार दिए गए हैं?

   a. 5 b. 6

   c. 8 d. 3

4. धर्मनिरपेक्षता की प्रमुख विशेषता है-

   a. राज्य का अपना धर्म होता है।

   b. राज्य का अपना कोई धर्म नहीं होता है।

   c. यह धर्म का विरोध करता है।

   d. इनमें से कोई नहीं।।

5. संविधान की प्रस्तावना में निम्न में से किन तत्वों को शामिल किया गया है?

   a. पंथनिरपेक्षता

   b. समाजवादी

   c. एकता और अखंडता

   d. इनमें से सभी

लघु उत्तरीय प्रश्न:-

राजनीति से क्या समझते हैं?

लोकतंत्र क्या है?

धर्मनिरपेक्षता से क्या अभिप्राय है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न:-

हमें राजनीतिक सिद्धांत पढ़ने की क्यों आवश्यकता है? विश्लेषण करें।

व्यवहारिक जीवन में समानता से संबंधित विभिन्न पहलुओं का मूल्यांकन प्रस्तुत करें।

© JCERT not to be republished